International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 15-01-2020; Accepted: 02-02-2020; Published: 18-02-2020
Volume 2; Issue 1; 2020; Page No. 08-09

आधुनिक हिंदी कविता एवं नारी विमर्श

डॉ. योगिता राठौर
प्राचार्या, माँ नर्मदा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, धामनोद, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

हमारे प्राचीन साहित्य में नारी के गौरव का गुणगान अत्यधिक सशक्त रूप में चित्रित है। इसलिए कहा भी गया है "यथा नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" से अभीभूत करते हुए नारी को दुर्गा, आदिशक्ति, देवी आदि रूपों में सम्मान दिया गया है और स्त्री को पुरुष की शक्ति माना गया है। नारी को शक्ति स्वरूपा और देवी मानकर पुरुष ने उसे सदा अपने से आगे स्थान दिया है। नारी गुणों की खान है। हमारे देश में हमेशा से ही नारी पूज्यनीय रही है। प्राचीन काल से लेकर आज तक का भारतीय इतिहास हर बात का साक्षी है कि नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष की अभिन्न सहयोगिनी के रूप में अपने नारीत्व को दीप्तमान करती आई है। वह उचित सम्मान की अधिकारी है।

मैथिलीशरण गुप्त ने नारी को सम्मानित करते हुए इसे व्याकरणिक रूप से श्रेष्ठ माना है उनके अनुसार "एक नहीं दो–दो मात्राएं हैं, नर से भारी नारी" मानव जीवन में जो कुछ भी सत्य, शिव और सुंदर है, वह नारी के रूप में प्रस्तुत है। संपूर्ण भारतीय साहित्य नारी के विविध चित्रों से ओतप्रोत है। वास्तव में सत्य यह है कि जिस युग के समाज में नारी का जो स्थान था वह उसी रूप में चित्रित की गई है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की सारी मान्यताएं, मर्यादाए उस युग के साहित्य में स्वतः उभर उठती है।। यही कारण है कि आदिकाल से लेकर आज तक के साहित्य में चित्रित नारी के विविध रूप अपने युग की नारी विषयक मान्यताओं के ही प्रतिरूप है। स्वतंत्रता से पूर्व के साहित्य में मानदंड एवं जीवन मूल्य अलग–अलग है परंतु समकालीन साहित्य में लक्षणीय बदलाव आया है। स्त्री यहां अधिक उभर कर आई है। प्रयोगवादी कवियों ने अपने काव्य में नारी चित्रण के विभिन्न रूपों को विभिन्न कोणों से उभारा है 'तार सप्तक' के कवियों ने अपने काव्य में जहां एक और व्यक्ति की निजी व्यथाएं, कुंठाए, अनुभूतियां, अभिव्यक्ति है वहीं प्रेम सौंदर्य के रूप में नारी का भी चित्रण बड़ी खूबसूरती एवं मार्मिकता से किया है। प्रयोगवादी कवियों ने नारी को चाहे कुंठाग्रस्त भाव से या उसके रूप सौंदर्य से प्रभावित होकर, तृप्ति अथवा अतृप्ति के अभाव में देखा और चित्रित किया है किंतु इनके चित्रण सांकेतिक है, जबकि रीतिकालीन नारी स्थुल सौंदर्य के प्रतिरूप में दिखाई देती है और छायावाद कालीन नारी कल्पना जगत से परिपूर्ण चित्रण में नजर आती है।

अज्ञेय की कविताओं में भी नारी मन की कोमल भावनाओं और प्रणय के स्वप्न, रूप सौंदर्य नए प्रतीकों में अभिव्यक्त हुए हैं। उनके रागात्मक संबंधों की विशेषता यह है कि वे अंतर्मुखी है और उनकी कविताओं में भी यही अंतर्मुखी प्रेम भावना नारी के प्रति दिखाई देती है। जैसे उन्होंने अपनी कविताओं में कई जगह प्रेमिका को "खिले हुए लाल गुलाब का गुच्छा" कहा है, तो कहीं "कितनी प्यास" और "बाजरे की छरहरी कलगी" बताया है। इस तरह "इंद्रधनुष रौंदे हुए" को देखें तो इस संग्रह की कविताओं में भी नारी की व्यक्तिवादी और निजी संबंध की छाया मंडराती नजर आती है। उनकी अधिकांश रचनाएं प्रकृति और प्रेम के इर्द–गिर्द घूमती है। उनके प्रकृति चित्रण में प्रतीकों का अधिक प्रयोग हुआ है। नारी के प्रति मुग्ध भाव और उसके प्रेम सौंदर्य से संबंधित अज्ञेय जी की कुछ पंक्तियां देखी जा सकती है, जिसमें उन्होंने प्रकृति के माध्यम से नारी सौंदर्य का वर्णन किया है।

"घिर गया नभ उमड़ आए मेघ काले
भूमि के कम्पित उरोजो पर झुका सा
विशद श्वासरहित चिरासतुर छा गया
इंद्र का नील वक्ष वज्र सा
यदि तड़ित से झुलसा हुआ सा"

इस प्रकार उपरोक्त पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि अज्ञेय के कविता संसार में नारी प्रति को नए भाव बोध आदि के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। उसके रागात्मक संबंधों को ही कवि ने उजागर किया है

गजानन माधव मुक्तिबोध का प्रयोगवादी कवियों में एक अलग स्थान है। वह एक प्रतिबद्ध कवि एवं आलोचक माने जाते हैं। वैसे तो मुक्तिबोध मार्क्सवादी विचारधारा के कवि है परंतु वह भी रागात्मक संबंधों से अछूते नहीं रह सके है। यत्र तत्र उनकी कविताओं में नारी की कोमल भावनाएं और उसका संसार दिखाई देता है। वे लिखते हैं –

"क्या हमारे भाव शब्दातीत है?
क्या तुम्हारा रूप भावातीत है?
हम न गा सकते तुम्हारा गीत है
हृदय गंभीर तिरोसिक्त है"

कुछ और पंक्तियां नारी प्रेम और उसकी भावना से संबंधित कुछ इस प्रकार है–

"कर सको घृणा क्या इतना
रखते हो अखंड तुम प्रेम
जितनी अखंड हो सके घृणा उतना प्रचंड
रखते हो जीवन का व्रत नेम
प्रेम करोगे सतत?"

इस प्रकार स्पष्ट है कि मुक्तिबोध की कविताओं में नारी चित्रण प्रसंगवश ही हुआ है। अन्य प्रयोगवादी कवियों की भांति उनकी कविताओं में नारी चित्रण का प्रयोग स्पष्ट रूप से नहीं हुआ है।

अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरा "तार सप्तक" के कवियों में भवानी प्रसाद मिश्र जी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी कविताओं में नारी सौंदर्य का चित्रण प्रकृति के माध्यम से किया है साथ ही उन्होंने नारी

चित्रण की अभिव्यक्ति के लिए प्रेम विरह वेदना को स्थान दिया है। उनका मानना है कि इसका भी अपना एक सुख होता है। उनकी इस अभिव्यक्ति को उनकी एक कविता "टूटने का सुख" में देखा जा सकता है। "कल के फूल फिर से" कविता में व्यक्तिगत प्रेम की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है–

"फूल लाया हूं कमल के
क्या करूं इनका?
पसारे आप आंचल छोड़ दूं
हो जाए जी हल्का
कुछ नहीं होता किसी की भूल का
मेरी की तेरी भूल हो"

धर्मवीर भारती की कविताओं में भी नारी मन की भावनाएं व्यक्त हुई है। उनकी कविता में जो नारी चित्रण है वह प्रेमिका के रूप में है। इस संदर्भ में उनकी "गुनाह का दूसरा जश्न", "कच्ची आंखों का इसरार", "मुग्धा" "उदासमय" "फागुन की शाम" आदि कविताएं उल्लेखनीय है। स्थूल प्रेम इनकी कविता की विशेषता है जैसे –

"यह शरद के चांद से
उजले धुले पांव
मेरी गोद में
यह लहर पर नाचते
तोज कसम की छांव
मेरी गोद में"

"तीसरा सप्तक" में भी पूर्व सप्तक परंपरा के अनुसार प्रयोगवादी कवियों की कविताओं में भी नारी की निजी अनुभूतियां प्रेम और सौंदर्य स्मृतियों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। कुंवर नारायण सिंह की कविताओं में नारी का चित्रण प्रेयसी के रूप में मिलता है। प्रयाग नारायण त्रिपाठी भी अपनी कविता में नारी का चित्रण अपनी प्रेमिका के रूप में करते हैं और चाहते हैं कि वे अपनी प्रेमिका के साथ अंतिम क्षण बिताएं। इस संदर्भ में वे लिखते हैं–

"गर्म धूप में नर्म दूब पर
बैठे रहे निकट हम किसी ध्यान में
बहुत पास फिर भी उदास
डूबे डूबे से"

"नरम दूब पर
स्वच्छ धूप में दो क्षण और नहाए
बाहे किसी भरम के पुलके
ओंठ गर्म हो जाए गहरे हरे नीले से
क्षण चंचल हो गिरे सहज हम फिरे"

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्रयोगवाद में जो नारी चित्रण मिलता है। कवियों की अपनी निजी अनुभूतियों से जुड़ा है। इन कवियों ने नारी का चित्रण कहीं प्रेमिका के रूप में तो कहीं प्रेयसी के रूप में या फिर निजी दुनिया में रमने वाली नायिका के रूप में या फिर प्रकृ ति के माध्यम से किया है। कुछ कवियों की कविताओं में नारी अपनी व्यथाओं से जूझती नजर आती है तो कुछ कवियों के लिए नारी चित्रण उनके जीवन की शक्ति है। एक ऐसी शक्ति जो उनके लिए रोशनी का काम कर रही है।

संदर्भ सूची

1. वृहत साहित्यिक निबंध पृष्ठ 650
2. हिंदी साहित्य कोश पृष्ठ 486
3. सभी कविता पंक्तियां "तार सप्तक" से
4. समसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य
5. समकालीन हिंदी कविता